The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 1 | January 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

दारा शिकोह के जीवन पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव: विश्लेषणात्मक अध्ययन

मोहम्मद आसिफ

पीएचडी शोधार्थी, बौद्ध अध्ययन विभाग,
कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली – 110007
masif.phd@buddhist.du.ac.in / mohdasifcp7@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

दारा शिकोह, भारतीय ज्ञान परंपरा, उपनिषद, धार्मिक समन्वय, सूफीवाद, बौद्धिक जिज्ञासा, उदारवादी दृष्टिकोण, साहित्यिक योगदान,

ABSTRACT

दारा शिकोह (1615-1659), बादशाह शाहजहाँ के सबसे बड़े पुत्र और नियुक्त युवराज, न केवल एक शाही व्यक्तित्व थे, बल्कि एक असाधारण रहस्यवादी और दार्शनिक भी थे। इस अध्ययन का उद्देश्य उनकी शाही साख पर चर्चा करने के बजाय, उनकी विचारधारा, भारतीय ज्ञान परंपरा और सूफी रहस्यवाद के प्रति उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण करना है। दारा शिकोह ने सूफी कादिरी संप्रदाय के अनुयायी और मियाँ मीर के शिष्य के रूप में, भारतीय और इस्लामी परंपराओं में गहरी रुचि ली। उनके दर्शन का मुख्य आधार यह था कि हिंदू और इस्लामी रहस्यवाद एक ही सार्वभौमिक सत्य की ओर संकेत करते हैं। उन्होंने इन परंपराओं के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा समानताओं को उजागर किया, जिससे स्पष्ट होता है कि उनके प्रयास न केवल व्यक्तिगत अध्यात्म तक सीमित थे, बल्कि उनका उद्देश्य समाज में धार्मिक सहिष्णुता और सामंजस्य स्थापित करना भी था। दारा शिकोह ने संस्कृत के विद्वानों को आश्रय दिया और उनके सहयोग से भगवद्गीता और 50 उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया। यह उनकी गहन जिज्ञासा और भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति उनके आदर को दर्शाता है। उन्होंने 'सिर्र-ए-अकबर' (महान रहस्य) नामक ग्रंथ में उपनिषदों के विचारों का उल्लेख किया, जिसे उन्होंने इस्लामी रहस्यवाद के दृष्टिकोण से जोड़ा। उनकी रचनाएँ न केवल उनके समय के लिए प्रासंगिक थीं, बल्कि आज भी धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। उनकी उदार और

समन्वयकारी दृष्टि के कारण उन्हें अकबर की आत्मा का अवतार माना गया। वे उस समय की उदारवादी प्रवृत्तियों का केंद्र बन गए और उनके नाम को दर्शनशास्त्र और भारतीय-इस्लामी परंपराओं के समन्वय के प्रतीक के रूप में देखा जाने लगा। उनकी दृष्टि और कार्य आज भी सांप्रदायिक सौहार्द और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने में एक प्रेरणास्रोत हैं।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.14848244

परिचय

मुगल बादशाह शाहजहां के सबसे बड़े बेटे दारा शिकोह बौद्धिक और धार्मिक संश्लेषण के इतिहास में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। उनकी विद्वतापूर्ण खोज, विशेष रूप से रहस्यवाद और दर्शन के क्षेत्र में, इस्लामी और भारतीय (विशेष रूप से हिंदू) ज्ञान परंपराओं से गहराई से प्रभावित थी। सूफीवाद और वेदांतिक विचारों की दुनिया में फैले उनके काम धार्मिक सीमाओं से परे एक एकीकृत आध्यात्मिक दर्शन की खोज को प्रकट करते हैं। इस शोधपत्र का उद्देश्य दारा शिकोह के बौद्धिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर भारतीय दार्शनिक परंपराओं, विशेष रूप से उपनिषदों और अद्वैत वेदांत के प्रभाव की आलोचनात्मक जांच करना है। दारा शिकोह (1615-1659) मुगल बादशाह शाहजहां के सबसे बड़े बेटे और औरंगज़ेब के बड़े भाई थे। दारा अपनी बौद्धिक क्षमताओं, धार्मिक विचारों और प्रशासनिक प्रयासों के लिए जाने जाते हैं। हालांकि उनका शासनकाल संक्षिप्त था, लेकिन उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देने और भारतीय उपमहाद्वीप की विभिन्न धार्मिक परंपराओं के बीच संवाद स्थापित करने की कोशिश की।[1] दारा शिकोह का जन्म 20 मार्च 1615 को हुआ था। उनके पिता शाहजहां और माँ मुमताज महल दोनों ही मुगल शाही परिवार के सदस्य थे। दारा का लालन-पालन शाही माहौल में हुआ और उन्हें उच्च स्तर की शिक्षा मिली। उनके जीवन पर भारतीय संस्कृति और इस्लामी शिक्षा का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया और विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच आपसी समझ स्थापित करने की कोशिश की।[2]

दारा शिकोह के धार्मिक विचारों पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव

दारा शिकोह भारतीय दर्शन, विशेष रूप से अद्वैत वेदांत और उपनिषदों से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने उपनिषदों और सूफीवाद के तत्वों में समानता को देखा और इन दोनों परंपराओं के बीच संबंध स्थापित करने की कोशिश की। उनके विचार धार्मिक सहिष्णुता और परस्पर संवाद को बढ़ावा देने के लिए उल्लेखनीय थे।[3] दारा शिकोह को इस्लाम और हिंदू धर्म के बीच सामंजस्य स्थापित करने वाला एक महान धर्मनिरपेक्ष विचारक माना जाता है। उनके महत्वपूर्ण धार्मिक कार्यों में से एक *मजमा अल-बहरीन* (दो महासागरों का मिलन) है, जिसमें उन्होंने इस्लाम और हिंदू धर्म के सामान्य आध्यात्मिक तत्वों को उजागर करने का प्रयास किया। उन्होंने उपनिषदों का फ़ारसी में अनुवाद भी किया ताकि इस्लामी विद्वानों को यह समझने का अवसर मिले कि हिंदू दर्शन और रहस्यवाद में क्या समानताएँ और गहराइयाँ हैं।[4] आध्यात्मिकता के क्षेत्र में, भारत-मुस्लिम संश्लेषण की एक उल्लेखनीय अभिव्यक्ति कई सुधारवादी धार्मिक प्रवृत्तियों का उदय और लोकप्रिय थी। इन सुधारकों ने हिंदुओं और मुसलमानों को एक-दूसरे की धार्मिक शिक्षाओं को समायोजित करके करीब आने का आह्वान किया। कुछ सुधारकों ने हिंदू धर्म की जाति व्यवस्था को खारिज कर दिया और हिंदू समाज के भीतर गरीबी और सामाजिक असमानता की निंदा की। सामूहिक रूप से, इन शिक्षाओं को भक्ति के रूप में जाना जाता था।[5] भारत-मुस्लिम सांस्कृतिक संलयन की ये प्रवृत्तियाँ न केवल भक्ति जैसे जमीनी स्तर के आंदोलनों में बल्कि शाही दरबारों में मुस्लिम और हिंदू अभिजात वर्ग की कविता और दर्शन में भी स्पष्ट थीं। हालाँकि, ऐसे आंदोलनों के अभिजात वर्ग के संस्करणों में, उनके जमीनी समकक्षों के विपरीत, सामाजिक समानता या जाति व्यवस्था के विरोध के विचार शामिल नहीं थे। यह संभवतः विदेशी मुस्लिम शासक मंडलों द्वारा स्थानीय हिंदू अभिजात वर्ग के आंशिक आत्मसात का परिणाम है, जिन्होंने अपने साझा राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक हितों की रक्षा के लिए गठबंधन बनाए। मुस्लिम और स्थानीय अभिजात वर्ग दोनों ने महसूस किया कि इन जातीय और धार्मिक रूप से विविध तत्वों के बीच घनिष्ठ सहयोग उनकी सामाजिक स्थिति और नव स्थापित मुस्लिम राज्य की राजनीतिक

स्थिरता को बेहतर ढंग से सुरक्षित कर सकता है। मुस्लिम और स्थानीय हिंदू अभिजात वर्ग के बीच सहयोग की ऐसी प्रवृत्तियाँ विशेष रूप से महान मुगल सम्राट अकबर (1556-1605) के शासनकाल के दौरान स्पष्ट थीं, जिन्होंने एक नया धर्म, दीन-ए-इलाही शुरू किया, जिसमें मुस्लिम रहस्यवाद, हिंदू धर्म, जैन धर्म, पारसी धर्म और अन्य सहित विभिन्न धर्मों के तत्वों को मिलाने का प्रयास किया गया। इस उपक्रम का मुख्य उद्देश्य मुगल साम्राज्य की राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करना था। हालाँकि, यह धर्म सम्राट के करीबी घेरे के बाहर गति प्राप्त करने में विफल रहा। 17वीं शताब्दी में, विशेष रूप से 1630 और 1650 के दशक के बीच, इन समन्वयकारी धार्मिक-दार्शनिक विचारों का सबसे प्रमुख प्रतिनिधि दारा शिकोह (1615-1659) था, जो मुगल सम्राट शाहजहाँ का सबसे बड़ा पुत्र था। युवराज के रूप में, वह शाही दरबार में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता था और अपने परदादा, सम्राट अकबर के धार्मिक और दार्शनिक विचारों का सच्चा अनुयायी था।[6] दारा शिकोह ने बचपन से ही प्राचीन भारतीय धार्मिक और दार्शनिक साहित्य में गहरी रुचि दिखाई। उनके अनुरोध पर, योग वशिष्ठ, भगवत गीता और रहस्यवादी नाटक प्रबोध चंद्रोदय जैसे कई प्रमुख हिंदू धार्मिक-दार्शनिक ग्रंथों का फारसी में अनुवाद किया गया। हिंदू धार्मिक ग्रंथों में उनकी रुचि ने उन पर पाखंड और रूढ़िवादिता से विचलन के आरोप लगाए, जिसके कारण मुस्लिम रूढ़िवादियों और यहां तक कि 1652 में सम्राट औरंगजेब ने भी उन पर आरोप लगाए।[7] दारा शिकोह ने न केवल वेदों और उपनिषदों जैसे प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया, बल्कि उन्हें यहूदी और ईसाई धार्मिक साहित्य जैसे पेंटाटेच, न्यू टेस्टामेंट और इस्लामी सूफी लेखन का भी अच्छा ज्ञान था। वह हिंदू धार्मिक साहित्य में रुचि दिखाने वाले पहले मुस्लिम अभिजात नहीं थे। अकबर के प्रसिद्ध इतिहासकार अबू अल-फ़ज़ल और उनके बड़े भाई फ़ैज़ी ने भी हिंदू महाकाव्यों का अध्ययन किया था और महाभारत के फ़ारसी अनुवाद में भाग लिया था।[8] दारा शिकोह का विश्वदृष्टिकोण सूफी शिक्षाओं से बहुत प्रभावित था, जो सदियों से पूर्व में बेहद लोकप्रिय थी। सूफीवाद के सर्वेश्वरवादी विचारों को शास्त्रीय फ़ारसी कविता में प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति मिली, जिसमें दारा अत्यधिक कुशल थे। उनके समय में, मिर्ज़ा अब्दुल कादिर बेदिल अज़ीमाबादी, मुल्ला जामी बेखुद और मीर जलाल-उद-दीन सय्यद लाहौरी जैसे प्रमुख फ़ारसी कवि भारत में रहते थे। 16वीं शताब्दी के अंत से लेकर

17वीं शताब्दी की शुरुआत तक, नाज़िम हरवई हेराती, मीर मुज़्दीन मुहम्मद फ़ितरत मेशहादी और सरमद काशानी जैसे अन्य फ़ारसी कवि भी भारत आए।[9] यह भी सर्वविदित है कि दारा शिकोह न केवल समकालीन सूफी फ़ारसी कविता में पारंगत थे, बल्कि शास्त्रीय फ़ारसी साहित्य के भी जानकार थे। उन्होंने जलाल-उद-दीन रूमी (1207-1273), अब्दुल मजीद मजादुद सनाई (मृत्यु 1131), नूर-उद-दीन अब्दुल रहमान जामी (1414-1482) और निज़ामी के खम्सा जैसे महान फ़ारसी कवियों का अध्ययन किया। 1651 में, उन्होंने अपने हस्ताक्षर वाली इस पुस्तक की एक प्रति मुहम्मद हकीम जोहरी तबरीज़ी को भेंट की। दारा शिकोह के रहस्यवादी विचार न केवल फारसी सूफी कवियों से बल्कि समकालीन सूफी संतों और हिंदू योगियों से भी प्रभावित थे। वह मुस्लिम, हिंदू, ईसाई और यहूदी परंपराओं के धार्मिक विद्वानों, रहस्यवादियों और दार्शनिकों का संरक्षक था। कादरिया संप्रदाय के दो प्रमुख सूफी संतों, मियां मीर और मुल्ला शाही बादशाही के अलावा, जिनके साथ दारा का सीधा संबंध था, उनका दार्शनिक और धार्मिक दृष्टिकोण हिंदू योगी बाबा लाल दास बैरागी के प्रभाव में विकसित हुआ, जो भक्ति आंदोलन के एक प्रमुख व्यक्ति थे।[10] यह अच्छी तरह से प्रलेखित है कि दारा का ईरानी शहर काशान के एक यहूदी व्यक्ति सूफी रहस्यवादी सरमद काशानी के साथ संबंध था, जिसे यहूदी धार्मिक ग्रंथों का गहरा ज्ञान था। बाद में, उन्होंने इस्लाम धर्म अपना लिया और भारत आकर मुहम्मद सईद नाम अपना लिया। सरमद के धार्मिक विचार बाबा लाल दास से भी अधिक उदार थे, और अपनी कविता में, उन्होंने समन्वयवादी धार्मिक विचारों को बढ़ावा दिया। दारा शिकोह ने सरमद को कई पत्र लिखे, जिसमें उन्हें "मेरा गुरु और शिक्षक" कहा गया, जबकि सरमद ने दारा को "मेरा मित्र" कहा। यह उनके बीच घनिष्ठ संबंध को दर्शाता है। दारा ने अपने पीछे एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विरासत छोड़ी, जिसमें सफीन अल-अवलिया (1640), साकिन अल-अवलिया (1642), रिसाला-ए-हकनामा (1651-1653), और हसनत अल-अरफिन (1652) जैसी शुरुआती रचनाएँ शामिल हैं, जो सूफी संतों के जीवन और कार्यों पर केंद्रित हैं।[11] हालांकि, दारा की सबसे मूल्यवान कृतियों में उनकी अंतिम तीन पुस्तकें शामिल हैं: मजमा अल-बहरीन (दो महासागरों का मिलन) (1653), सर अल-असरार (रहस्यों का रहस्य) या सर अल-अकबर (महान रहस्य) (1657), हिंदू धार्मिक ग्रंथ उपनिषदों का उनका पूर्ण अनुवाद, और अक्सीर

अल-आज़म (सबसे बड़ा अमृत), उनकी कविताओं का संग्रह। मजमा अल-बहरीन में, दारा ने न केवल भारतीय दार्शनिक साहित्य की सार्वभौमिक शब्दावली की व्याख्या की, बल्कि इसके मुस्लिम सूफी समकक्ष भी प्रदान किए। इस कार्य में, उन्होंने सर्वोच्च सत्य की वैदिक और सूफी अवधारणाओं के बीच समानताएं खोजने की कोशिश की। 1708 में, मजमा अल-बहरीन का संस्कृत में समुद्र संगम शीर्षक के तहत अनुवाद किया गया।[12]1640 में, दारा ने हिंदू विद्वानों की मदद से उपनिषदों का संस्कृत से फ़ारसी में अनुवाद शुरू किया। उनका मानना था कि पवित्र कुरान (56:78) में वर्णित छिपी हुई पुस्तक, किताब अल-मकनून, वास्तव में उपनिषद ही थी। चूँकि कुरान ने इसकी ओर इशारा किया था, इसलिए दारा ने इसके ज्ञान को मुसलमानों के लिए आवश्यक माना क्योंकि इसमें एकेश्वरवाद के खजाने समाहित थे।[13] अपनी कविता में, दारा शिकोह ने सभी चीज़ों की सर्वेश्वरवादी एकता पर जोर दिया, और कहा कि दुनिया और प्रकृति ईश्वर के सार की अभिव्यक्ति हैं। दारा के अनुसार, दुनिया में मौजूद हर चीज़ में ईश्वरीय सार है, और जो कुछ भी इसके बाहर रहता है वह एक भ्रम है, मानव भ्रम का उत्पाद है। ईश्वर में विपरीतताओं की सर्वोच्च एकता की उनकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति उनके विश्वदृष्टिकोण की एक मुख्य विशेषता बन गई। उन्होंने लिखा कि मृत्यु के बिना, किसी का नाम हमेशा के लिए नहीं रह सकता है, और नौकर के बिना, कोई मालिक नहीं हो सकता है। स्वतंत्रता जंजीरों से उत्पन्न होती है, और मालिक के बिना, कोई नौकर नहीं हो सकता।[14] अपने कामों में, दारा शिकोह ने अच्छाई और बुराई की एकता की भी खोज की, उन्हें सर्वोच्च सत्ता के हिस्से के रूप में देखा, उनकी अन्योन्याश्रित प्रकृति पर प्रकाश डाला। उनका मानना था कि एक बार जब कोई सत्य के सार को पहचान लेता है, तो वह ईश्वर के रहस्यों पर भरोसा करेगा, और यह स्वीकार करना कि ईश्वर अच्छाई और बुराई दोनों का निर्माता है, पापों के लिए पश्चाताप लाएगा। इस प्रकार, उनकी सूफी शिक्षाओं ने मनुष्यों को सांसारिक चिंताओं से खुद को अलग करने का आग्रह किया।[15] अपने लेखन में, दारा शिकोह ने न केवल मनुष्यों की दिव्य क्षमता की प्रशंसा की, बल्कि स्वर्गदूतों और जिन्न जैसी आध्यात्मिक संस्थाओं का भी सम्मान किया। अन्य सूफी विचारकों की तरह, दारा ने मुल्लाओं की रूढ़िवादिता की आलोचना की, इस बात पर जोर देते हुए कि मनुष्य, अपने भीतर एक दिव्य मूल विकसित कर चुके हैं, वे

दिव्य प्राणियों द्वारा भी पूजा के योग्य हैं। उनके लेखन में रूढ़िवादी धार्मिक संस्थाओं की कठोरता के प्रति लगातार विरोध प्रकट होता है।[16]

दारा शिकोह का पतन

दारा शिकोह का पतन मुगल साम्राज्य के भीतर राजनीतिक साज़िश, पारिवारिक प्रतिद्वंद्विता और धार्मिक तनावों की एक दुखद परिणति थी। जबकि वह शाहजहाँ का पसंदीदा बेटा और नामित उत्तराधिकारी था, उसकी बौद्धिक खोज और समन्वयवादी धार्मिक विचार अंततः उसके लिए विनाशकारी साबित हुए। 1657 में शाहजहाँ की बीमारी के बाद उत्तराधिकार के लिए संघर्ष ने इस नाटकीय संघर्ष के लिए मंच प्रदान किया, जिसने दारा को उसके अधिक व्यावहारिक और महत्वाकांक्षी भाई औरंगज़ेब के खिलाफ खड़ा कर दिया। दारा का व्यक्तित्व और विश्वास प्रचलित राजनीतिक माहौल से बहुत टकराते थे। वह दार्शनिक और रहस्यवादी अध्ययनों में गहराई से डूबा हुआ था, हिंदू विद्वानों और सूफी मनीषियों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखता था। उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य, मजमा-उल-बहरीन ("दो महासागरों का मिलन"), हिंदू धर्म और इस्लाम के बीच की खाई को पाटने की कोशिश करता था, जो एक सामान्य अंतर्निहित सत्य के लिए तर्क देता था। यह दृष्टिकोण, बौद्धिक रूप से उत्तेजक होने के साथ-साथ रूढ़िवादी मुस्लिम गुटों को अलग-थलग कर देता था, जो इसे इस्लामी सिद्धांतों से एक खतरनाक विचलन के रूप में देखते थे।[17] दूसरी ओर, औरंगजेब ने खुद को इस्लामी रूढ़िवाद के कट्टर रक्षक के रूप में पेश किया। उसने इन धार्मिक हलकों की चिंताओं का कुशलतापूर्वक फायदा उठाया, दारा को एक विधर्मी के रूप में चित्रित किया, जिसके उदार विचारों ने आस्था की अखंडता को खतरे में डाल दिया। इस धार्मिक आयाम ने राजनीतिक संघर्ष में एक शक्तिशाली भावनात्मक आवेश जोड़ा, औरंगजेब के लिए समर्थन जुटाया और दारा की स्थिति को कमजोर किया। इसके बाद होने वाले सैन्य अभियान निर्णायक थे। शुरुआती समर्थन और संसाधनों के बावजूद, दारा एक अप्रभावी सैन्य नेता साबित हुआ। उसे सामूगढ़ (1658) और देवराई (1659) की लड़ाई में महत्वपूर्ण हार का सामना करना पड़ा, जिसने प्रभावी रूप से उसके भाग्य को सील कर दिया।[18] ये हार

केवल दारा की सैन्य अक्षमता के कारण नहीं थीं, बल्कि औरंगजेब की बेहतर रणनीतिक सूझबूझ और दारा के रैंकों के भीतर प्रमुख समर्थकों के दलबदल के कारण भी थीं। अपनी अंतिम हार के बाद, दारा को पकड़ लिया गया और दिल्ली लाया गया। सिंहासन पर अपने दावे को वैध बनाने के लिए एक सुनियोजित कदम के रूप में, औरंगजेब ने एक सार्वजनिक मुकदमा चलाया जिसमें दारा पर धर्मत्याग का आरोप लगाया गया। यह सार्वजनिक अपमान और उसके बाद 1659 में फांसी की सजा किसी भी संभावित असंतुष्टों के लिए एक शक्तिशाली संदेश के रूप में काम आई। इसने न केवल दारा के जीवन का अंत किया, बल्कि मुगल दरबार के भीतर इस्लाम की अधिक कठोर और रूढ़िवादी व्याख्या की जीत को भी चिह्नित किया।[19] दारा शिकोह का पतन मुगल इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। इसने अकबर जैसे पहले के सम्राटों की अधिक सहिष्णु और समावेशी नीतियों से हटकर अधिक धार्मिक रूप से रूढ़िवादी युग की ओर बदलाव का संकेत दिया। हालाँकि उनके समय में उनकी समन्वयवादी दृष्टि प्रबल नहीं हुई, लेकिन अंतर-धार्मिक संवाद और बौद्धिक जिज्ञासा के चैंपियन के रूप में उनकी विरासत आज भी गूंजती है।

निष्कर्ष

दारा शिकोह का जीवन और दुखद अंत मुगल साम्राज्य के भीतर धार्मिक और राजनीतिक गतिशीलता की जटिलताओं में एक सम्मोहक केस स्टडी प्रस्तुत करता है। इस शोध ने दारा के विश्वदृष्टिकोण पर भारतीय बौद्धिक परंपराओं, विशेष रूप से उपनिषदों और अद्वैत वेदांत के गहन प्रभाव का पता लगाया है। उनकी बौद्धिक खोज, जो मजमा-उल-बहरीन और हिंदू धर्मग्रंथों के उनके फारसी अनुवाद जैसे कार्यों में परिणत हुई, हिंदू धर्म और इस्लाम के बीच कथित विभाजन को पाटने के एक ईमानदार प्रयास को प्रदर्शित करती है, जो एक साझा रहस्यमय मूल की वकालत करती है। यह समन्वयवादी दृष्टिकोण, जबकि अभिनव और बौद्धिक रूप से उत्तेजक था, अंततः उसके पतन में योगदान दिया। धार्मिक सद्भाव के बारे में दारा का दृष्टिकोण मुगल दरबार और व्यापक समाज के कुछ हिस्सों में बढ़ती रूढ़िवादिता के बिल्कुल विपरीत था। हिंदू विद्वानों और सूफी रहस्यवादियों के साथ उनके

घनिष्ठ संबंध, धार्मिक ग्रंथों की उनकी दार्शनिक व्याख्याओं के साथ, उन लोगों द्वारा संदेह और यहां तक कि शत्रुता के साथ देखा गया, जो पारंपरिक इस्लामी सिद्धांतों के सख्त पालन को प्राथमिकता देते थे। औरंगजेब ने इन चिंताओं का कुशलतापूर्वक फायदा उठाया, दारा को इस्लाम की अखंडता के लिए खतरा बताया और धार्मिक उत्साह के आधार पर समर्थन जुटाया। सत्ता संघर्ष में यह धार्मिक आयाम महत्वपूर्ण साबित हुआ, जिसने पहले से ही जटिल राजनीतिक परिदृश्य में एक शक्तिशाली वैचारिक परत जोड़ दी। औरंगजेब के हाथों दारा को मिली सैन्य हार केवल उसके कथित धार्मिक विचलन का परिणाम नहीं थी। हालाँकि, इसने उसके विरोधियों को मौजूदा पूर्वाग्रहों का लाभ उठाने और अपनी शक्ति को मजबूत करने का अवसर प्रदान किया। इस्लाम की रक्षा के लिए एक आवश्यक कार्य के रूप में तैयार किए गए दारा के बाद के परीक्षण और निष्पादन ने विश्वास की अधिक उदार और समावेशी व्याख्याओं पर रूढ़िवाद की जीत का एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में कार्य किया। दारा शिकोह की विरासत जटिल और बहुआयामी है। जबकि धार्मिक सद्भाव की उनकी दृष्टि को अंततः उनके अपने समय में खारिज कर दिया गया था, यह उन लोगों के साथ प्रतिध्वनित होना जारी है जो अंतर-धार्मिक संवाद और समझ की वकालत करते हैं। वह अंतर-सांस्कृतिक आदान-प्रदान की क्षमता और प्रतीत होता है कि दुर्गम विभाजन को पाटने में बौद्धिक जिज्ञासा की स्थायी शक्ति की याद दिलाता है। उनका जीवन और कार्य एक मूल्यवान ऐतिहासिक लेंस के रूप में काम करते हैं जिसके माध्यम से धार्मिक रूढ़िवाद और बहुलवाद के बीच चल रहे तनावों की जांच की जा सकती है, न केवल मुगल साम्राज्य के संदर्भ में बल्कि समकालीन समाज में भी। उनकी कहानी विभिन्न धर्मों के बीच समान आधार की तलाश और आपसी सम्मान को बढ़ावा देने की स्थायी प्रासंगिकता को रेखांकित करती है, एक संदेश जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना 17वीं शताब्दी में था।

संदर्भ

1. Aziz, K. K. (2001). *The making of Pakistan: A study in nationalism*. Oxford University Press.
2. Ali, T. (2007). *The duel: Pakistan on the flight path of American power*. Free Press.
3. Eaton, R. M. (2000). *The rise of Islam and the Bengal frontier, 1204–1760*. University of California Press.

4. Nizami, K. A. (1972). *The Mughal Empire*. Oxford University Press.
5. Latif, S., & Mushtaq, A. Q. (2013). Dara Shikoh: Mystical and philosophical discourse. *International Journal of History and Research, 3*(2), 17–24. Retrieved from https://www.academia.edu/download/45500676/--1366121680-2_-Dara_Shikoh_-_full.pdf (p. 17)
6. Latif, S., & Mushtaq, A. Q. (2013). Dara Shikoh: Mystical and philosophical discourse. *International Journal of History and Research, 3*(2), 17–24.(p. 18)
7. *Encyclopedia of Islam*. (1961). Vol. 2, f. 24, p. 135. London-Leiden.
8. Latif, S., & Mushtaq, A. Q. (2013). Dara Shikoh: Mystical and philosophical discourse. *International Journal of History and Research, 3*(2), 17–24.(p. 18)
9. Rizaev, Z. G. (1971). *Indian style in Persian poetry in the 17th and 18th century* (p. 53). Tashkent.
10. Hasrat, B. J. (1944). The Diwan and quatrain of Dara Shikuh. *Islamic Culture, 18*(3), 148.
11. Latif, S., & Mushtaq, A. Q. (2013). Dara Shikoh: Mystical and philosophical discourse. *International Journal of History and Research, 3*(2), 17–24. (p. 19)
12. Shakoh, D. (1971). *Sakinat-al-Auliya* (M. B. Badakhshani, Trans.). Packages Limited.
13. Hasrat, B. J. (1953). *Dara Shikuh: Life and works* (p. 213). Visvabharati.
14. Latif, S., & Mushtaq, A. Q. (2013). Dara Shikoh: Mystical and philosophical discourse. *International Journal of History and Research, 3*(2), 17–24. (p. 20)
15. Shakoh, D. (1971). *Sakinat-al-Auliya* (M. B. Badakhshani, Trans., p. te-zoi). Packages Limited.
16. Latif, S., & Mushtaq, A. Q. (2013). Dara Shikoh: Mystical and philosophical discourse. *International Journal of History and Research, 3*(2), 17–24. (p. 20-21)
17. Schimmel, A. (1980). *Islam in the Indian subcontinent* (Vol. 4 of *Handbook of Oriental Studies: Section 2, South Asia*, p. 100). BRILL.
18. Sarkar, J. (1912). *A history of Jaipur: 1503–1938*. Orient Longman.
19. Eaton, R. M. (2000). *The rise of Islam and the Bengal frontier, 1204–1760*. University of California Press.